भरतपुर जिले के मानसिक विक्षिप्त रूप से पिछड़े बालकों की शिक्षा और सामाजीकरण का अध्ययन

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
डॉक्टर ऑफ फिलॉसोफी की
उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशक

डॉ. मन्जु शर्मा
(डायरेक्टर) शिक्षा संकाय
ज्योति विद्यापीठ विश्वविद्यालय
जयपुर राज.

शोधकर्त्री
अदिती कुमारी
JVR-1/22/10001

शोध केन्द्र

शिक्षा एवं अनुसंधान विभाग संकाय

ज्योति विद्यापीठ विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

2022—2023

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	प्रस्तावना	3
2.	शोध का परिचय	6
3.	शोध अध्ययन की आवश्यकता	7
4.	शोध का महत्व	7
5.	समस्या का चयन	8
6.	शोध समस्या के उद्देश्य	9
7.	शोध का परिसीमन	10
8.	उपकरण	10
9	न्यादर्श	11
10	परिकल्पना	12
11	संबंधित साहित्य का अध्ययन	13
12	विधि	13
13	चर	13
14	उपकरण	13
15	शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी	14
16	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	14

भरतपुर जिले के मानसिक विक्षिप्त रूप से पिछड़े बालकों की शिक्षा और सामाजीकरण का अध्ययन

प्रस्तावना –

मानसिक रूप से पिछड़े बालक हमारे समाज के लिए एक बड़ी चिंता का विषय है। कुछ बालक मानसिक रूप से उप सामान्य बालक शिक्षा में कक्षा में अध्यापक से शिक्षा कार्य को समझने में असमर्थ होते है। या उन्हे आसानी से समझ नहीं पाते। ऐसे बालकों को मंद बुद्धि बच्चों की श्रेणी में रखा जाता है।

वैज्ञानिको ने यह तथ्य दिया है कि ऐसे बालक पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। बालको को उनकी बुद्धि के आधार पर वर्गीकृत किया गया हैं।

वैज्ञानिक तरमन के अनुसार :–

70 से कम बुद्धिलब्धि वाले बालको को मन्दबुद्धि बालक कहते हैं। ऐसे बालक को किसी की शारीरिक या मानसिक रोग के कारण मंदबुद्धि का प्रदर्शन करते रहते है। अपनी आयु की स्तर के अनुसार किसी भी कार्य करने में असमर्थ होते है।

आईजेक के अनुसार –मानसिक क्षमता को अपूर्ण और अपर्याप्त सामान्य विज्ञान मानसिक मन्दबुद्धि कहलाता है। मंदबुद्धि के आधार पर किया जाने वाला वर्गीकरण नही है।

इस बालको के मानसिक विकास सामान्य की तुलना में बहुत कम होता है।

<u>को व को के अनुसार</u> –

'सवेग गतिशील, आन्तरित) समायोजन है जो व्यक्ति के संतोष सुरक्षा और कल्याण के लिए कार्य करता है।

वुडवर्थ के अनुसार : –"सवेग वुडवर्थ की उत्तेजित दशा है "हमारे मन व बौद्धिक विकास को बहुत सारे तथ्य–प्रभावित करते है। –

भावनात्मक संतुलन :– मनुष्य का प्रिय मित्र और अप्रिय, शत्रु, उसका मन हैं मन में आश्रित आशाएँ आकाक्षाएँ और उनकी प्राप्ति अप्राप्ति सम्बन्धी दृढ सुकल्प व्यक्ति के क्रियात्मक जगत को रचना करता है। क्रिया पूर्ण पर व्यक्ति थोड़ा अंहकारी बनता है और हमारा अंहकार आग

के दरिया में समा जाता है। मनुष्य के कार्यों में आने वाले उतार चढाव दोनो मनुष्य के बौद्धिक और भावनात्मक पक्ष को प्रखर करते हैं।

समग्र समायोजन :– यदि बालक को अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं होता है। तो. उसमे मानसिक तनाव और सवेगात्मक) संघर्ष उत्पन्न हो जाता है। यदि बालक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हो जाता है। तो वह अपनी परिस्थितियो से समायोजन कर लेता है। यदि उसे सफलता नहीं मिलती है। तो वह असमायोजन की स्थिति में आ जाता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए परिस्थितियों को ही अनुकूल बनाना या परिस्थितियों के अनुकूल हो जाना ही समायोजन कहलाता है।

तथा उनके वर्गीकरण निम्न है।

1. जड :– इस वर्ग के बच्चों की बुद्धि स्तर 0 से 19 के बीच में होता है। यह सबसे मुर्ख निम्‍ श्रेणी के होते है। तथा यह कोई भी कार्य स्वय नहीं कर सकते है।

2 हीन बुद्धि :– इस वर्ग के बच्चो का बुद्धि का स्तर 20 से 49 के बीच में होता है। ऐसे बच्चे पढ़ लिख नहीं, सकते परंतु वे अपनी रक्षा हेतु सचेत हो सकते है।

3. दुर्बल बुद्धि :– इस वर्ग के बच्चों का बुद्धि स्तर, 50 से 70 के मध्य होता है। यह बालक बहुत कम लिख सकते है। अपने घरेलू कार्य करने के लिए सक्षम होते है तथा ट्रेनिंग करने के बाद अपनी रोजी रोटी भी कमा सकते है।

उनमे

4 मंद तथा पिछड़ा वर्ग :– इस वर्ष के बच्चो का बुद्धि स्तर 70 से 80 के बीच में होता है। यह सामान्य बच्चों की तुलना में सुस्त प्रकृति के होते है उनमें उत्साह संवेगात्मक प्रक्रिया में सजगता की कमी होती है। ऐसे बच्चों को आसानी से बेवकूफ बनाया जा सकता है।

5. पयार्थत : यदि मन्द बुद्धि बालको को शिक्षा भी दी जाये तो वे बहुत आगे नहीं चल पाते । इस दृष्टि से उन्हें उतनी ही शिक्षा दी जाय जितनी वे बौद्धिक दृष्टि से गृहण कर सकते है।

6. प्रत्येक बौद्धिक या शारीरिक कार्य उनकी बौद्धिक और शारिरीक क्षमता को ध्यान में रखकर कराया जाए।

पिछड़े बालक कि शिक्षा

स्टोन्स के शब्द में :– आजकल पिछड़ेपन के क्षेत्र में किया जाना वाला अधिकांश अनुसंधान का सिद्ध करता है। की उचित ध्यान दिये जाने पर पिछड़े बालक शिक्षा में प्रगति कर सकते है। पिछडे बालको की शिक्षा के प्रति उचित ध्यान देने का अभिप्राय हैं उनकि शिक्षा का उपयुक्त संगठन। हम इस संगठन के तत्वो को प्रस्तुत कर सकते है।

भरतपुर जिले मे :– भरतपुर जिले का अपना घर आश्रम दीन दुखियो बेसहारा , मंदबुद्धि बेघर लोगो का ठिकाना है। उनके रहने–खाने का इंत्जाम अपना घर आश्रम में होता है। इसे 22 साल पहले एक छोटे से कमरे से शुरू किया था अपना घर आश्रम आज देश विदेश तक फैला गया है। अपना घर आश्रम की देश–विदेश में लगभग 55 शाखाऐं संचालित हैं।
सरकार की मदद के बिना अपना घर आश्रम दीन दुखियों की सेवा कर रहा हैं। अपना घर आश्रम का लगभग 10 लाख रुपये रोजाना का खर्चा है। खर्चे की पूर्ति के लिए सिर्फ ठाकुर जी को चिट्ठी लिखी जाती है।

बर्ट के अनुसार :– पिछडे बालक कि बुद्धि लब्द्धि 85 से कम होती है। कक्षा में बालको के पिछड़ने का प्रमुख कारण बुद्धि की कमी है। परन्तु इसका अर्थ कदापि नहीं कि प्रत्येक पिछड़ा हुआ बालक मंदबुद्धि होता है। एक सामान्य बुद्धि का बालक भी कक्षा कार्य में पिछड़ सकता है।

सामाजीकरण :–सामाजीकरण वह प्रक्रिया है। जिसके माध्यम से मनुष्य समाज के विभिन्न व्यवहार, रीति–रिवाज, गतिविधियाँ इत्यादि सीखता है। जैविक अस्तित्व से सामाजिक अस्तित्व में मनुष्य का रूपातरण सामाजीकरण के माध्यम से ही होता है। सामाजीकरण से ही वह संस्कृति को आत्मसात करता है।

सामाजीकरण में सहायक कारक :–

पालन पोषण :–पालन–पोषण के माध्यम से उचित तथा अनुचित व्यवहार का भेद ज्ञात करता है। परिवार के सदस्य पालन–पोषण करते समय, आवश्यकताओं को पूरा करते समय, बालक को यह बतलाते है कि इन आवश्यकताओं को पूरा करने का सही ढंग क्या है।

सामाजिक प्रशिक्षण : – शिशु परिवार एवं अन्य समूहों (क्रीडा, समूह, शिक्षण समूह) के सम्पर्क

के में आता है तथा उनसे समाज के आदशो मान्यताओं, नियमों आदि के बारे में प्रशीक्षण पाता है। उन्हें आत्मसात करता है।

(1) दण्ड समाजीकरण के माध्यम के प्रति घृणा उत्पन करर देता है।

शिक्षा द्वारा बालक का समाजीकरण : – बालक के समाजीकरण में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। परिवारके बाद शिक्षा ही वह माध्यम है। जिसके द्वारा बालक का समाजीकरण सम्पन्न होता है। शिक्षा के दो महत्वपूर्ण साधन शिक्षक और विद्यालय समाजीकरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है।

- शिक्षक चूंकि समाज के बदलते स्वरूप को भलीभाति समझतेहै। और उसके अनुसार ही बच्चे कोशिक्षित करने का प्रयास करके करते है।
- विद्यालय को चलाने वाली संस्थाओं के प्रबन्धक समय–समय पर शिक्षकों के साथ सम्पर्क साथ कर और अधिवेशन आदि बुला कर शिक्षा के स्तर को समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल बनाने का निरन्तर प्रयास करते रहते है।
- विद्यालयों में शिक्षण के लिए शिक्षण विधियां अपनायी जाती है। इन विधियों के माध्यम से बच्चे को शिक्षा प्रदान करके उनकी कार्यशीलता को बढ़ाने का प्रयास किया जाता है।
- समाजीकरण में शिक्षा के योगदान को स्पष्ट करने के लिए यहा समाजीकरण की दिशा में शिक्षक और विद्यालयों के कार्यों का उल्लेख करना ।

शॉनेल के अनुसार :– जो छात्र अपनी आयु से कम योग्यता रखता है। उसे पिछड़ा बालक कहा जाता है।

1.2 शोध का परिचय :– मानसिक रूप से पिछड़े बालक हमारे समाज के लिए एक बड़ी चिंता का विषय है। कुछ बालक मानसिक रूप से उप– सामान्य बालक कक्ष में अध्यापक से शिक्षा कार्य को समझने में असमर्थ होते है। उन्हे आसानी से समझ नहीं पाते है। ऐसे बालको को मंदबुद्धि बच्चों की श्रेणी में रखा गया है।

सिरिजबर्ट के अनुसार – सिरिचार्ट के अनुसार मानसिक रूप से पिछड़ा बालक वह है जो अपने विद्यालय जीवन के मध्यकाल (लगभग) साढे दस वर्ष के आयु में अपनी कक्षा से नीचे की कक्षा का कार्य नहीं कर सकता जो कि उसकी आयु के लिए सामन्य कार्य है।

1.3 शोध अध्ययन की आवश्यकता :— कुछ बालक मानसिक रुप उपसामान्य बालक कक्षा में अध्यापक से शिक्षा कार्य को समझने में असमर्थ होते है। या आसानी से समझ नहीं पाते ऐसे बालको को मंदबुद्धि बच्चों की श्रेणी में रखा जाता है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है। ऐसे बालकों की और विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

ऐसे बालको का ध्यान अध्ययन कि ओर ओकर्षित करने के लिए मंदबुद्धि बालको को सीखानें के लिए जो वस्तुए दी जाए वे रंगीन व आकर्षक होनी चाहिए इससे वे आकर्षित होगें एवं रूची जागृत होगी।

ऐसे मंदबुद्धि बालको को कुछ हद तक आत्मनिर्भर बनाया जाना चाहिए 14 वर्ष की आयु के बाद बच्चें को व्यवसाय की ट्रेनिंग दी जा सकती है। जिससे कि भविष्य में कुछ कमाकर जिससे जीवन निर्वाह कर सके।

मंदबुद्धि बालकों को अध्ययन की आवश्यकता बहुत महत्वपूर्षा है। ताकि बालक धीरे–धीरे आत्मनिर्भर बन सके जिससे कि वह परिवार एवं समाज पर बोझ ना बनाकर समाज में सम्मानपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सके

इन सब का पता लगाने के लिए मेनें इस समस्या का चयन किया है।

1.4 शोध का महत्व :—

पिछडे बालको की शारीरिक और मानसिक विशेषताएँ सामान्य बालको से भिन्न होती है। कुछ अध्ययनो, से विदित हुआ है कि इनमें मौलिकता नहीं होती है। उनके क्रिया कलाप और सोचने विचारने तथा तर्क करने के तरीके भिन्न होते हैं। वे शारीरिक परिश्रम अधिक, रूचि लेते हैं। उनमे अमूर्त चिन्तन् का अभाव होता है। इन्हें किसी विषय को समझने में अधिक समय लगता हैं पिछड़े बालको के हर क्षण संदेश प्रमुख निर्देश अपेक्षित होता है। मनोविज्ञानिकों ने बालको की प्रमुख विशेषताए बतायी हैं।

मानसिक ग्रंथियाँ :— मानसिक गृथियों के अन्तर्गत कुछ आत्महीनता और विचार हीनता की ग्रंथिया हाती है। इनका प्रभाव इसके व्यवहार पर पड़ता हैं ।

बुद्धि की क्षणिता :—इसके अन्तर्गत वे अपनी आयु के बालक से कम योग्यता रखते है। अतः उनमें ज्ञान की कमी होती है।

मिरगी उन्माद, मनोस्नायु विकार बहुत से बलकों में इस तरह के रोग होते है। इसकी वजह से उनमें मानासिक पिछडा दृष्टि गोचर होता है।

1.5 समस्या का चयन :–"भरतपुर जिले के मानसिक विक्षित रूप से पिछड़े बालको को शिक्षा और सामाजीकरण का अध्ययन'

पिछड़े बालक – बालिकाओ की कुछ विशिष्ट समस्या होती जो उनके पिछडेपन की ओर, पुष्ट करती है। अध्ययनो से ज्ञात हुआ है। कि मानसिक रूप से पिछड़े बालको में पलायनवादिता, अपराधी प्रवृत्तियाँ धोखाधड़ी, आत्म प्रदर्शन झूठ बोलना तथा यौन अपराध आदि अवाछंनीय व्यवहार आ जाते है। अध्ययन से ज्ञात हुआ है। कि लगभग 10 अपराधी बालको मे 6 विशेष रूप से शिक्षण में पिछड़े होते हैं।

ये बालक अपनी कमजोरियों को छिपाने का प्रयास करते है।

इनकी प्रमुख समस्या निम्नलिखित हैः

बौद्धिक स्तर की न्यूनता :– पिछड़े बालको का बौद्धिक स्तर अपने ही आयु समूह के बालको) से नीचा होता है। वे अपनी कक्षा से नीचे की कक्षा की योग्यता रखते है। इनकी बुद्धि लब्धाक 85 से अधिक नहीं होता। सामान्य बालकों के लिए प्रयुक्त शिक्षण विधिया इसके लिए उपयोगी नहीं होती है। इन्हें किसी बात को कई बार समझाना पड़ता है। इनका ध्यान– विस्तार कम होता है । वे अवधान को केन्द्रित करने में असमर्थ होते है। इनमे विस्मरण अधिक होता है। बौद्धिक न्यूनता के कारण ये सामान्य बालको के साथ कक्षा में पढ़ाई नहीं कर सकते है।

पलायनवादि प्रवृति :– पलायनवादिता और पिछड़ेपन में घनिष्ठ सबंध हैं पलायनवादिता विभिन्न अपराधों को जन्म देती है।

थ्रेसर महोदय ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया हैं कि 12 वर्ष से अधिक आयु का प्रत्येक अभ्यस्त पलायनवादि बालक असामाजिक क्रियाकलापों में सलंग्न गिरोह का प्रमुख बन जाता है। और फिर अपराधबढ़ने लगते हैं।

सामाजिक कुसमायोजन :– पिछड़े बालक मे सामाजिक समायोजन की क्षमता नही होती हैं। वे परिवार विद्यालय समाज और मित्र–मण्डली के साथ अपना समायोजननही कर पाता। पिछड़े

हुए बालकों में हीन ग्रंथियों के कारण उनकी, सामाजिक–समायोजन की सदस्यों का बता दी जाती है। वे समाज में स्वयं को ढाल नही सकते । समाज से अलग–अलग रहते है।

यौन समस्याएँ : –– शारीरिक और मानसिक परिवर्तन दो प्रत्येक बालक बालिका में होते है। परंतु शैक्षिक और बाहिक दृष्टि से पिछड़े बालकों में इन परिवर्तनों का प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की सम्भावना रहती है। पिछड़े. बालक–बालिकाओं में कृत्रिम मेथुन या हस्तमैथुन की आदत बन पड जाती हैं ।इस आदत के भयंकर परिणाम होते हैं।

शिक्षण की समस्या : – वे बालक जिनका बुद्धि–लवधाक 70 से कम होता है। उन्हें पढ़ना–लिखना बडा दुष्कर होता है। सामान्य बालको से साथ सामान्य विद्यालयो
मे उनका शिक्षण सम्भव नहीं होता है।

1.6 शोध अध्ययन के उद्देश्य :–भरतपुर जिले के नदबई करने का राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मानसिक रूप से पिछड़े तथा दिव्यांग बच्चों के जीवन में शिक्षा का उजियारा फैलाने में मिल का पत्थर साबित हो रहा है। बच्चा ठीक से नहीं बोल पाता तो कोई समझ नहीं पाता कोई शरिरिक रूप से तो कोई मानसिक रूप से कमजोर है। लेकिन विद्यालय का सदर्भ कक्ष ऐसे बच्चों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह ऐसे दिव्यांग बच्चों को हर दिन विभिन्न उपकरणों और तकनीकों के माध्यम से अध्ययन कराया जा रहा है। ताकि वह समाज की मुख्य धार से जीवन यापन कर सके विद्यालय प्रशासन का मान तो नदबई ब्लॉक के करीब 232 दिव्यांग बच्चें यहाँ के संदर्भ कक्षा से जुड़े हुए है। जो कि यहां शिक्षा ग्रहण करते हैं। ''शिक्षक पप्पू लाल मीणा'' ने बताया है कि विद्यालय में ऐसे 9 दिव्यांग बच्चे अध्ययनरत है। ऐसे बच्चों के सरकार द्वारा कई प्रकार के अन्य भत्ते उपलब्ध कराए जाते है। तथा इनको अध्ययन विभिन्न प्रकार के उपकरण के माध्यम से अध्ययन कराया जाता है।

वही शारीरिक रूप से असक्षम या कमजोर बच्चों को यहाँ फिजियोथेरेपी भी कराई जाती हैं
इसके लिए संदर्भ कक्ष में एक्सरसाइज के लिए साइकिल व अन्य उपकरण भी उपलब्ध है।

नदबई ब्लॉक के अलग–अलग राजकीय विद्यालयों सेयहा के संदर्भ कक्ष में कुल 232 बच्चे जुड़े हुए हैं। जिनमें 2 नेत्रहीन, 15 आशिक अधनता, 10 मूक बधिर 10 वाणी दोष, 87 अस्थि विकलांग, 88 मंद्बुद्धि, दो अधिगम अक्षमता,10 बहुविकलांग है।

प्रमुख उद्देश्य –

1. मानसिक रूप से पिछड़े बालकों में आत्मनिर्भर–आत्मविश्वास की भावना जागृत हो।
2. उन्हें आर्थिक स्वालम्बी बनाने वाली हो।
3. व्यक्तिगत स्वच्छता की आदतों का विकास करे।
4. मानसिक रूप से पिछड़े बालकों से संवेगात्मक बुद्धिलब्धि का अध्ययन करना।
5. संवेगात्मक बुद्धिलब्धि व मानसिक मनोस्थिति के सम्पूर्ण प्रभाव का अध्ययन करना।
6. सामाजिक गुणों का विकास करना।

1.7 शोध का परिसीमन –

प्रस्तुत शोध कार्य भरतपुर जिले के निकट बसे ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित है।

1. विद्यालयवार – सरकारी एवं निजी दोनों प्रकार के विद्यालय लिये जायेंगे।

2. कक्षावार – प्राथमिक स्तर, उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित करना है।

3. उपकरण – प्रस्तुत शोध में एक स्वनिर्मित एक प्रमाणीकृत उपकरण किया जायेगा।

4. भाषावार – शोध में हिन्दी ओर अंग्रेजी दोनों माध्यम वाले विद्यालयों को सम्मिलित किया जायेगा।

1.8 उपकरण – प्रस्तुत शोधकार्य में शोधार्थी द्वारा प्रमापनी पहली संवेगात्मक बुद्धिलब्धि मापनी व दूसरी मानसिक मनोस्थिति प्रमापनी का प्रयोग किया गया है। मानसिक रूप से पिछड़े बालकों में शिक्षा के लिए निम्न उपकरण का प्रयोग इस प्रकार है –

- परीक्षण का माध्यम हिन्दी होना चाहिए।
- परीक्षण के विभिन्न समूहों पर बिना किसी कठिनाई के प्रशासित किया जाना चाहिए।
- परीक्षण की भाषा सरल तथा विद्यार्थियों को प्रश्नों को समझने में किसी भी प्रकार की कठिनाई नहीं होनी चाहिए।

1.9 न्यादर्श – प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री ने आँकड़ों के चयन हेतु राजस्थान राज्य के भरतपुर जिले में स्थित सरकारी और गैर सरकारी प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में से 240 सरकारी तथा 240 गैर सरकारी में चुने हुआ है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा यादृच्छिक प्रतिचयन न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

480

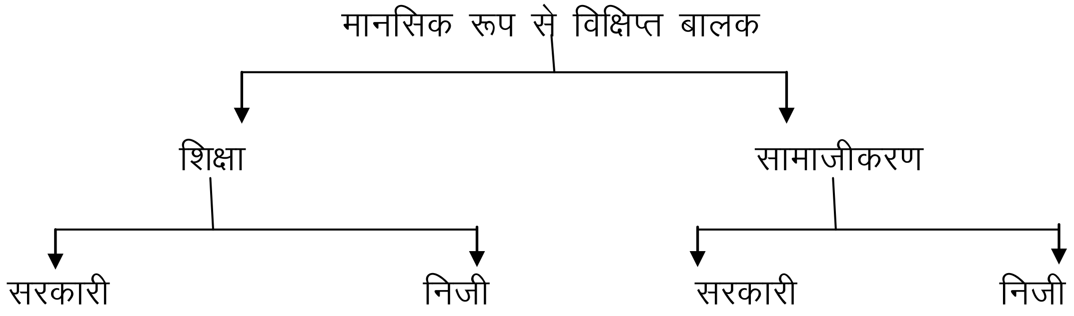

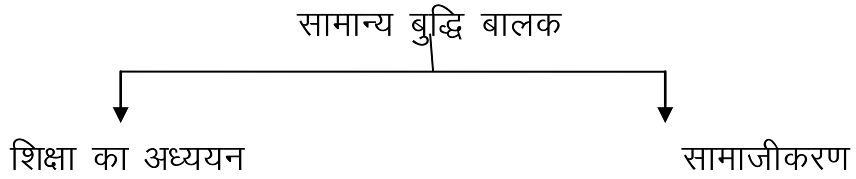

भरतपुर जिला भारत के राजस्थान राज्य का एक जिला है। इस जिले में कुल 10 तहसीलें है। जिले का कुल क्षेत्रफल 5066 वर्ग किलोमीटर है। इस जिले में 10 कस्बे और 1524 गाँव है। भरतपुर की जनसंख्या 2023 में 3542363 होने का अनुमान है। जघीना राजस्थान के भरतपुर जिले की भरतपुर तहसील में स्थित एक बड़ा गाँव है। जिसमें कुल 1600 परिवार निवास करते है। 2011 की जनगणना के अनुसार जहीना गांव की कुल आबादी 10334 है। जिसमें से 6000 पुरूष है, जबकि 4334, महिलाएं है ये तो अनुमान है। 2011 की जनगणना के अनुसार।

भरतपुर जिले में कुल 13 तहसील है। भरतपुर मंडल में भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर जिले है। भरतपुर को लोहागढ़ के नाम जाना जाता है। भरतपुर के जाट शासक लक्ष्मण को अपना कुलदेवता मानते थे। भरतपुर का एक मात्र लक्ष्मण मंदिर भरतपुर में ही है, भरतपुर जिले में जो गाँव है उसमें आंगनबाड़ी में बच्चों को खाने–पीने से लेकर बच्चों को पढ़ाना–लिखाना सब बहुत अच्छे से किया जाता है। न्यादर्श में सभी को बताया गया है।

मानसिक रूप से मंद बच्चों का वर्गीकरण

- शिक्षा योग्य या मूर्ख
- परीक्षण योग्य या कुछ निर्भर या कुछ मूर्ख
- प्रशिक्षण के अयोग्य या पूर्णत निर्भर का जड़ बुद्धि

1.10 शोध परिकल्पना –

परिकल्पना का अर्थ – पूर्व चिंतन यह अनुसंधान की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। इसका तात्पर्य है किसी समस्या के विश्लेषण व परिभाषीकरण के पश्चात् इसमें कार्य और कारण के संबंधों का पूर्ण चिंतन कर लिया जाता है। यह अनुमान उनके प्रारम्भिक ज्ञान और अनुभव के आधार पर लगाया जाता है। इसी पूर्वानुमान को परिकल्पना कहा जाता है।

1. मानसिक रूप से पिछड़े बालकों को शिक्षा की और जागरूक करना चाहिए ताकि उनका सामाजीकरण में वह अपना योगदान कर सके।
2. मानसिक रूप से पिछड़े बालकों को नियमों का पालन करना बताना चाहिए ताकि वह अनुशासन में रहना सिख सके जिससे बच्चों का समाजीकरण में सहायक है।
3. बच्चों को उनके रीति–रिवाज एवं मान्यताओं को भी सिखाना चाहिए ताकि बच्चों का समाजीकरण में सहायक हो।

1.11 संबंधित साहित्य का अध्ययन –

- डेट एण्ड (2006) इमोशनल मेच्योरिटि ऑफ मेल एण्ड फीमेल सैकण्डरी स्कूल टीचर्स ऑक दक डिस्ट्रीक्ट जनरल ऑफ कम्यूनिटी गाइडेन्स एण्ड रीसर्च।
- मंडिया (2010) ने 22 वर्ष की उम्र वाली अध्यापिकाओं की मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का अध्ययन किया गया और पाया कि उनमें बहुत–सी मानसिक स्वास्थ्य समस्यायें थी। इस अध्ययन से मनोवैज्ञानिक मापन की महता एवं विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए उचित मनोचिकित्सा का अभाव सामने आया।

- सिन्हा, शरद तथा यादव ज्यादि (2011–2012) ने
- गैर सरकारी व सरकारी स्कूलो के विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- गैर सरकारी तथा सरकारी स्कूलों की छात्राओ के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
- दुआ, राघ तथा शर्मा नमिता (2011–12) ने मानसिक रूप से पिछड़े बालको के उच्च नियत्रंण , सरक्षण , उच्च अनुपालन , उच्च पोषण , उच्च पारितोष तथा दण्ड अधिकारो के वचन उत्तम मानसिक स्वास्थ्य के कारक है।
- मानसिक स्वास्थ्य मापने के लिए अरूण कुमार सिंह एवं अल्पना सेन गुप्ता (2000) द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य बौटरी का प्रयोग किया गया।
- सिंह जितेन्द्र (2014) ने शारीरिक विकलांगता एवं सामान्य विद्यार्थियों के मध्य समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया। इससे जिले के 500 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें (250) विद्यार्थी शारिरिक विकलागंता वाले तथा (250) सामान्य थे।

1.12 **शोध अध्ययन की विधि** :– प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक विधि को अपनाया जायेगा भरतपुर जिले में मानसिक रूप से पिछड़े बालक , संवेगात्मक स्थिरता , सामाजिक परिपक्तता तथ्य बौद्धिक प्रवीणता से भी पिछड़े रहते है। कई बार ऐसे बच्चे शारिरिक रूप से तो परिपक्व हो जाते है। लेकिन उनका सामाजिक और संवेगात्मक व्यवहार उनकी आयु के बच्चों से बहुत पिछड़ा हुआ है।

1.13 शोध के चर :– शोध परिकल्पना में अनेक चर या कारक सम्मिलित किसे जाते है। सामाजिक विज्ञानों में सम्बन्धित घटना को प्रभावित करने वाले कारको को ही चर के रूप में जाना जाता है। ''चर शब्द अंग्रेजी के शब्द'' का रूपान्तरण है। जिसका अर्थ परिवर्तित करने वाले या होने वाले कारको से है।

चर के दो प्रकार होते है। स्वतंत्र चर तथा आश्रित चर ।

स्वतंत्र चर किसी आश्रित चर का अनुमानित कारक है।

आश्रित चर स्वतंत्र चर का अनुमानित प्रभाव है।

स्वतंत्र चर :– सक्रिय रहकर सीखने की विधि।

आश्रित चर :– सीखने की प्रभावशीलता (क) शैक्षिक उपलब्धि (ख) उपस्थिति (ग) विषय के प्रति रूचि।

1.14 शोध उपकरण :– प्रस्तुत अध्ययन की पूर्ति हेतु शोधार्थिनी द्वारा निम्नलिखित मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।

- आर के टंडन द्वारा निर्मित सामूहिक मानसिक योग्यता परीक्षण। ऐसे उपकरणों को प्रयोग में लिया जायेगा जिससे बच्चों को परेशानी न हो।
- प्रतिभा देव एवं आशा मोहन (2012) द्वारा निर्मित अचीवमेंट मोटिवेशन टेस्ट प्राजेक्टिव।
- स्पान आफ इमीडिएट मैमोरी
- रचनात्मक क्रिया का मापन हेतु स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग शोध हेतु किया जायेगा।

1.15 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय तकनीकियाँ :– वर्णनात्मक साख्यिकी द्वारा विभिन्न उपकरणों से प्राप्त आकड़ो की प्रकृति का प्रयोग ज्ञान करने हेतु विस्तृत आकड़ो का संक्षिप्त चित्र प्रस्तुत करने के उद्देश्य से निम्न संख्यिकीय गणनाओ का प्रयोग किया जाएगा।

- मध्यमान
- प्रामाणिक विचलन
- रेखाचित्रीय प्रदर्शन
- टी परीक्षण

1.16 संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

- चौहान वी.एल.एण्ड भटनागर टी (2003) एसेसिंग एमोशनल मेच्योरिटी , उमोशनल इक्सप्रेशनल एण्ड इमोशनल क्वेटेन्ट आफ एडोलेसेन्स मेल एण्ड फील स्टडे जनरल ऑफ कम्यूनिटी गाइडेंस एण्ड रिसर्च।
- डेट एण्ड (2006) इमोशनल मेच्योरिटी ऑफ मेल एण्ड फीमेल सैकण्डरी स्कूल टीचर्स ऑफ दक डिस्ट्रीक्ट जनरल ऑफ कम्यूनिटी गाइडेन्टस एण्ड रिसर्च ।
- हेवार्ड डब्ल्यू जे (2006) विशिष्ट बालक , काउसिल ऑफ एक्वेसनल चिल्ड्रेन से प्रकाशित।

- मंगल एस. के. (2007) विशिष्ट बालक , प्रेंटिस हाल आफ इंडिया से प्रकाशित।
- रेनाल्डस सी.आर. एड जानजेन इ.एफ (2007) इन्सालक्लो पीडिया ऑफ स्पेशल एडुकेशन जान वाइली एड संस से प्रकाशित।
- बालकृष्ण (2013) इमोशनल मेच्युरिटी ऑफ टीचर्स इन रिलेशन टू देयर सब्जेक्टस एण्ड देअर इयर्स ऑफ इक्सपिरियन्स जनरल ऑफ टीचर एजूकेशनल रिसर्च।
- चतुर्वेदी अमित एण्ड रीना कुमार (2012) रोल ऑफ इोशनल मेच्युरिटी एण्ड उमोशनल इन्टेलिजेंस इन लर्निग एण्ड एच्वीवमेन्ट इन स्कूल कान्टेक्स्ट शैक्ष्ज्ञिक परिसम्बाद (इन इन्टरनेशनल जनरल आफ एजुकेशन)
- धर्मवीर तली डी बी एण्ड गोयल अनूमा (2011) ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑन एन्जाइटी एण्ड इमोशनल मेच्योरिटी एमंश एडोलेसेन्स आफ को–एजूकेशनल एण्ड यूनी–एजूकेशनल स्कूलस , एकेडमिका एव इन्टरनेशनल स्कूल्स , एकेडमिका एन इन्टरलेशनल मल्टी डीसीप्लीनरी रीसर्च जनरल वॉल्यूम।